

प्रा. डॉ. एम्. एस्. हसमनोस

एम्. ए. पोस्च.डो.

पि. ना. महाविद्यालय, शिराला.

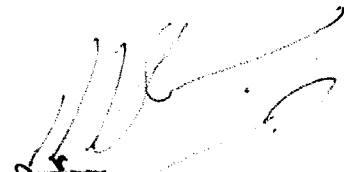
प्र मा ण प त्रा

.....

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्रीमती शोभा नाईक ने मेरे निर्देशान में यह शोध प्रबंध एम्.फिल, उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व योजनानुसार यह कार्य सम्पन्न हुआ है। जो तथ्य इस प्रबंध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारों के अनुसार सही हैं।

स्थान : कोल्हापुर

दिनांक: २९:६:९३



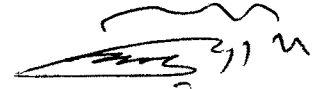
निर्देशक

प्रा. डॉ. एम्. एस्. हसमनोस

पि. ना. महाविद्यालय, शिराला

0000

येहरे



Head, Hindi Dept.
Shivaji University,
Kolhapur - 416 004.

शंकर शेष

प्राक्कथान
 :::::::::::

प्रस्तुत शो धा - प्रबंध का विषय डॉ. शंकर शोष के " चेहरे " नाटक का ^{सभीसामक अध्ययन} अनुशासन है। डॉ. शोष का यह एक प्रायोगिक और बहुपरिचित नाटक है। इस नाटक ने उसकी अनेक विशेषताओं के कारण मुझे आकर्षित किया। जैसे तो हिन्दो के अधिकांश नाटक केवल साहित्यिक गुणों से युक्त हैं। पर रंगमंच की दृष्टि से वे निराशाही करते हैं। स्वातंत्र्यपूर्व काल में इन नाटकों को ओर रंगमंच की दृष्टि से जितना ध्यान देना आवश्यक था इतना नहीं दिया गया। पर स्वातंत्र्योत्तर काल में जिन इने - गिने नाटककारों ने इस कमी को पूर्ण करने का प्रयत्न किया उनमें डॉ. शोष का नाम महत्वपूर्ण रहा। उनके " पोस्टर ", " एक और द्रोणाचार्य ", " रक्तबीज ", " चेहरे " नाटक कथ्य, मूल्य और प्रयोग की दृष्टिसे कुछ विशेष मालुम पड़ते हैं।

रंगमंच की दृष्टिसे डॉ. शोष ने अनेक प्रयोग किये। वे प्रयोगधर्मी नाटककार थे। उनके " चेहरे " जैसे नाटकों ने हिन्दो रंगमंच को महत्वपूर्ण योगदान दिया। आकाशवाणी, दूरदर्शन, रंगमंच सभों के लिए डॉ. शोष ने नाटक लिखे। उनका " चेहरे " नाटक खासकर दूरदर्शन के लिए लिखा नाटक था। पर आगे वह रेडिओ पर भी हो चुका और रंगमंच पर भी उसका सफल प्रयोग हुआ। इस नाटक के कथ्य, शिल्प, प्रयोग सभों की दृष्टि से मुझे वह विशेष लगा। डॉ. शोष जैसे प्रयोगशील नाटककार के प्रयोगशील नाटक का अनुशासन करने का विचार मेरे मन में आया। इस नाटक का पूरा अध्ययन, करना मेरे इस प्रबंध का लक्ष्य रहा। " चेहरे " नाटक का अनुशासन

करने का प्रयत्न मैंने इस प्रबंध में किया है।

इस प्रबंध में डॉ. शोष जैसे अहिन्दो भाषी नाटककार के जीवन पर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर मैंने प्रकाश डाला है। नाटक के तत्वों को लेकर उसका विवेचन भी मैंने किया है। नाटक में आयी समस्याओं का विवेचन मैंने किया है तथा कथ्य, शिल्प, शैली, मंच आदि की प्रयोगशीलता पर मैंने अपने प्रबंध में गहराई में जाकर अध्ययन किया है।

विवेचन की सुविधा को ध्यान में लेकर मैंने इस प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय में डॉ. शोष की जीवनो, व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डाला है। जैसे तो उनको जीवनो तथा कृतित्व अबतक अंधेरे में हो था। क्योंकि वे छूद प्रसिद्धि विन्मुखा - वृत्ति के थे। प्रकाश में आने के पहले ही उनका दुःखाद देहांत हो गया था। उनके व्यक्तित्व का प्रतिबिंब उनके नाटकों में दिखायी देता है। उनके नाटक अनुभवों पर छाड़े है इसीलए व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करना आवश्यक था।

दूसरे अध्याय में मैंने " चेहरे " नाटक का तात्त्विक विवेचन किया है। इस अध्याय में नाटक के तत्वों को लेकर नाटक का विवेचन किया है। साथ ही साथ नाटक की कथावस्तु, चरित्राचित्रण, भाषाशैली, देशकाल - वातावरण, उद्देश्य,

रंगमंच तथा शोषक को विस्तृत समीक्षा को है। इस नाटक में आदमो अभिनय करता है। चेहरे पर चेहरा चढ़ाए अपना असली स्मृति छिपाये रखाता है। पर अध्यापिकाजो निर्भय होकर सबके चेहरे के नकाब उतारती है। सभी कथानक लाश के इर्द-गिर्द घाटित होता है। इस नाटक का शोषक "चेहरे" है। समाज में आदमो चेहरे पर चेहरा चढ़ाए कैसा बर्ताव करता है यह बताया है।

तृतीय अध्याय में "चेहरे" नाटक में चित्रित सभी समस्याएँ अनुस्यूत हैं उनका विवेचन किया गया है। डॉ. शंकर शोष स्वतंत्रयोत्तर कालीन महत्वपूर्ण नाटककार रहे। स्वतंत्र्य प्राप्ति के बाद जो नये मूल्य और नयी समस्याएँ निर्माण हो गयी थीं उन समस्याओं का यथार्थ दर्शन नाटकों में मिलता है। यहाँ मैंने सिर्फ "चेहरे" नाटक में आयी समस्याओं का विवेचन किया है। प्रेम और विवाह विषयक समस्या, वेश्या व्यवसाय करनेवाली औरतों की समस्या, सामाजिक समस्या, शोषक - शोषितों की समस्या, नोति विषयक समस्या, समाज-सुधार के पाठाण्ड की समस्या, राजनीतिक समस्या, शिक्षा संस्था सम्बन्धी समस्या, आदि समस्याओं का विवेचन किया है। ये समस्याएँ स्वाभाविक स्मृति में नाटक में आ चुकी है। वर्तमान जीवन में उद्भूत ये समस्याएँ कथ्य का अंग बनकर आयी है।

चतुर्थ अध्याय में "चेहरे" नाटक की प्रायोगिकता का विवेचन किया है। डॉ. शंकर शोष की सबसे बड़ी विशेषता उनके प्रयोग में रहो है। नाट्य लेखान में उन्होंने रंगमंच को अधिक महत्व दिया है। "चेहरे" नाटक विशेषतः टो.यो.के लिए लिखा था। दूरदर्शन माध्यम की विशेषताएँ ध्यान में रखाकर

" वेहरे " नाटक लिखा । डॉ. शोष ने इस नाटक में हर पात्र के वेहरे को दिखाकर उसके अंदर जो विषये वेहरे हैं उनको सामने लाने का प्रयत्न किया है। वेहरे नाटक का पहला प्रयोग बंबई दूरदर्शन पर सितम्बर १९७९ में हुआ ।

डॉ. शंकर शोष का " वेहरे " नाटक पुरानो परंपरा को छोड़कर मरघाट में घटना यत्र घटित होता है। एक लाश के इर्द-गिर्द मरघाट में ये सभी पात्र बैठे हैं। यह प्रयोग हिन्दो में पहला ही होगा। हिन्दो में इसप्रकार का प्रयोग केवल शंकर शोष का ही दिखाई देता है। स्थल की दृष्टि से यह एक नया प्रयोग ही कहना चाहिये।

डॉ. शंकर शोष ने स्वातंत्र्योत्तर काल में उपेंद्रनाथ अशक, लक्ष्मोनारायण लाल, जगदोशचंद्र माधुर, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, विष्णू प्रभाकर आदि अनेक नाटककारों के साथ कदम मिलाकर अनेक बहुमूल्य नाटक लिखे। " एक और द्रोणाचार्य " " फन्दो " " वेहरे ", " छाजुराहों के शिष्यो ", " रक्तबोज " " कोमल गांधार " जैसे कलात्मक नाटक लिखाकर अपना महत्वपूर्ण स्थान हिन्दो साहित्य जगत में साबित किया। हिन्दो में अनेक मौलिक एवं प्रायोगिक नाटक लिखाकर उन्होंने हिन्दो नाट्यसाहित्य को समृद्ध किया। सुत्राठक शिष्य, भाषा और नये शिष्य जैसी विशेषताओं को लेकर ये नाटक उपस्थात हुए हैं। रेडियो, दूरदर्शन, चित्रपट, रंगमंच सभी माध्यमों के लिए ^{उन्होंने} नाटक लिखे। अपने सभी नाटकों का अंगन होने का सौभाग्य उन्हें मिला।

उनके नाटकों को अनेक पुरस्कार मिले। राष्ट्रीय पुरस्कार से भी वे सम्मानित रहे। स्वातंत्र्योत्तर कालीन श्रेष्ठ नाटककारों में उन्होंने अपना योगदान दिया है।

इस प्रबंधा के अन्त में उपसंहार तथा तीन परिशिष्ट दिये हैं।

डॉ. रोजाकुमार, गिरीश रस्तोगी, डॉ. वीणा गौतम सुरेश गौतम, डॉ. प्रकाश जाधव, डॉ. सुनिलकुमार लवटे आदि आलोचकों के ग्रंथों से मेरा मार्ग प्रशस्त बना। इन आलोचकों के ग्रंथ तथा डॉ. शोभा पर लिखे कई प्रबंधा मेरे लिए सहायक बने। "चेहरे" नाटक के लिए अत्यावश्यक सामुग्री जुटाना एक कठिन कर्म था क्योंकि इस नाटकपर पूरे विस्तार के साथ लिखने का मेरा पहला प्रयास रहा। उसके लिए मुझे हिन्दो विभागोय ग्रंथालय, पुणे विद्यापीठ, छार्डकर ग्रंथालय, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर, कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज, ग्रंथालय इस्लामपुर, वि.ना. महाविद्यालय, ग्रंथालय शिराला, छापती शिवाजी कॉलेज, ग्रंथालय सातारा, लालबहादूर शास्त्री कॉलेज, ग्रंथालय सातारा, गाडगे महाराज कॉलेज ग्रंथालय कराड आदि ग्रंथालयों से प्राप्त हुई। इन ग्रंथालयों के प्रमुखाँ का मे सदैव ऋणी हूँ।

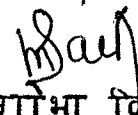
प्रबंधा लेखान में निर्देशक श्रद्धेय गुस्वर्य डॉ. एम. एम. हसमनोस का बहुमूल्य मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उनके मार्गदर्शन के बिना यह प्रबंधा पूरा नहीं होता। उनको मैं कृतज्ञ हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दो-विभाग के अध्यक्ष

डा०. प्हे०. के०. मोरेजो का बहुमूल्य मार्गदर्शन मिला । डा०. गजानन सूर्वे , डा०. सुरेश गायकवाड तथा लालबहादूर शास्त्री महाविद्यालय के प्राचार्य प्र० अभयसिंह राणे, डा०. घाटे, डा०. पो०. एस०. पाटोल, डा० सुनिलकुमार लवटे आदि ने मुझे इस काम में बार - बार प्रोत्साहित करके बल दिया । उनके शुभाशीष भी इस काम को पूर्ति में महत्वपूर्ण रहे ।

मेरी संस्था के अध्यक्ष श्री भगतीसिंग नाईक , पदाधिकारी, प्राचार्य श्री शिवाजी कुंभार तथा मेरे सहयोगी प्राध्यापकों ने मेरी अनेक प्रकार से सहाय्यता को उनको मैं ऋणी हूँ । मेरे अपने परिवार के लोगों ने भी बार - बार , प्रोत्साहन देकर इस काम को पूर्ण करने में मेरी सक्रोस सहाय्यता की इसलिए मैं उनकी ऋणी हूँ । मेरी जिगरी सहेली पाकिजा होला ने मुझे बार बार प्रोत्साहन दिया और प्रबंध पूरा करने में सहाय्यता दी, उसको भी मैं आभारो हूँ ।

इस प्रबंध को पूरा लगन से टंकिलिखित करने का काम श्रोयुत भारत चष्ठाणा सातारा ने किया उनको भी मैं आभारो हूँ ।


[प्रा०. शम्भा विलोप नाईक]

: समस्या नाटक, प्रेम और विवाह विषयक समस्या, वेश्या-व्यवसाय, व्यवसाय करनेवाली औरतों की समस्या, चेहरे नाटक में सामाजिक समस्या; शोषणक शोषितों की समस्या, नीति विषयक समस्या, धार्मिक क्रूरियों, समाज - सुधारक के पाछाण्ड की समस्या, राजनीतिक समस्या, आर्थिक समस्या, शिक्षा - संस्था सम्बन्धी समस्या.

अध्याय चौथा :=

" चेहरे " नाटक को प्रायोगिकता :

रंगमंच

हिन्दो रंगमंच का इतिहास :- भारतेंदु युग,

विद्वेदो युग,

प्रसाद युग

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दो नाटक

डा० शोष का हिन्दो नाटको में योगदान

" चेहरे " नाटक को प्रायोगिकता

" चेहरे " एक असंगत नाटक

उपसंहार :=

परिशिष्ट

१]. संदर्भ सूचि

२]. डा० शंकर शोष के नाटक

३]. डा० शोष के नाटकों को प्राप्त पुरस्कार.